# अनकहे दर्द

शशि प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

# अनकहे दर्द

प्रमिला गंगल



प्रकाशक
**शशि प्रकाशन मन्दिर**
सादाणियों की गली
मोहता चौक, बीकानेर–5

ISBN 81-86435-22-0

कृति · अनकहे दर्द
कृतिकार प्रमिला गगल
सस्करण 1999
मूल्य : नब्बे रुपये मात्र
मुद्रक · जवाहर प्रेस, बीकानेर

*ANKAHAI DARD (POTRIES)*
*by Pramila Gangal*

*@ 90/-*

पूज्य पिता श्री
स्व. श्री मुरारी लाल गुप्ता
के
श्री चरणों में सादर

## पहली बार पढ़ते हुए....

"मैं तो वंद किताब सदा थी, तुमने कब पढ़ना चाहा था..." इन शब्दो के सहारे यदि अपने सामाजिक परिवेश को देखे तो लगेगा कि एक ही युग में कई युग एक साथ जी रहे हैं।

यह सत्य आज का ही नहीं है, पुराने समाजो में यह सत्य रहता ही आया है।

प्रमिला गंगल के ये शब्द पुराने समाजों मे से एक समाज की व्यथा-कथा कहते हैं, सम्भवतः इसी सोच के सहारे गंगल ने अपने कविता संग्रह का नाम "अनकहे दर्द" रखा है।

समाज बहुत पुराना हो या फिर नया, नारी की स्थिति मे अतिरेक को छोड़कर बहुत बडा अन्तर नहीं आया है। जो स्थिति नारी की पहले थी, वह आज भी वही है, भोगने की स्थितियाँ व्यक्त हो तो आई है और जब तक विषमता की यह स्थिति वनी रहेगी, यह मनोदशा भी व्यक्त होती ही रहेगी।

व्यक्त होती हुई इन स्थितियो पर पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था को सोचना है कि उसका अपना ही एक हिस्सा जिसके सहारे वह अपना पूर्ण होना अनुभव करता आया है, इस तरह क्यो व्यक्त होता है? ऐसी अभिव्यक्ति मे उसकी अपनी भूमिका क्या है?

प्रमिला ने अपनी कविताओं के माध्यम से इस तरह के कई सवालो की प्राथमिक भूमिका बनाते हुए भी अपने ओज, अपनी आस्था को नहीं विसराया है।

गंगल की इस आस्था और ओज मे रूमानी आवेश है, रचना यात्रा के पहले चरण में यह वहुत स्वाभाविक है। इस स्वाभाविकता के चलते चलते ही वाहर के और भीतर के क्रूर यथार्थ का अनुभव होता है। भीतर की पीडा तो व्यक्त हुई ही है, वाहर की पीड़ा भी निर्मम शब्दों मे व्यक्त होगी, पहले पाठक के रूप में मैं एक सीमा तक आश्वस्त हुआ हूँ।

छंद जहॉ लय और राग के निर्वहन में सहायक होता है, वहीं कहीं अनुभव की निर्मम अभिव्यक्ति मे वाधक भी होता है, इस तरह के संकेत भी ये गीत कविताएँ देती हैं।

और अन्त में, यदि पूजा पूरी हो जाए तो जीवन अग्नि पथ कैसे रहेगा। अधूरी पूजा में ही जीवन के अग्निपथ होने का सुख मिलता है। पूजा का सार्थक्य उसकी नैरन्तर्यता मे ही है।

मैं प्रमिला की रचना यात्रा के निरन्तर विकास की कामना करता हूँ।

छबीली घाटी
बीकानेर

हरीश भादानी

## मन:स्थिति का उद्वेलन

आप सब की सद्भावनायें साथ लिए ही आगे बढने का प्रयास कर रही हूँ। नारी मन का अन्तर्द्वन्द्व सहज ही है जिसे मात्र नारी ही समझ सकती है। एक दो नहीं एक साथ कई कर्त्तव्यों की धारा में एक साथ बहती नारी कहीं तो झुंझलाहट महसूस करती है, विशेषकर जहां आशा की ज्योति दिखाई दे और उस ज्योति को उसके बिल्कुल सामने ही क्रूर हाथों से बुझा दिया जाये। उसके उत्कर्ष के अग्रगामी पैरों में यकाएक बैडियॉ पहनाने का प्रयत्न किया जाय या फिर भावनाओं के साथ घिनौना मजाक किया जाय, दृढ से दृढ़ हृदय भी टूट जाता है। एक साथ टूटना उतना भयावह नहीं होता जितना तिल तिलकर जलने की स्थिति होती है।

कर्त्तव्यों के बोझ से लदी नारी, ममता में घुली नारी, स्नेह से पूरित नारी मन के लिए सब सहज सुलभ है क्योंकि ये प्रकृति प्रदत्त है परन्तु इस सबके बाद भी मात्र दोषारोपण का पात्र बनाकर दंडनीय घोषित करने वाली स्थिति असहनीय व भयंकर परिणामों को जन्म भी देती है।

ऐसी भोक्ता नारियों से मिलकर मन:स्थिति मे उद्वेलन होना अनिवार्य हो गया। अतः वह पीडा को जन्म दे गई एक काव्य संग्रह "अनकहे दर्द" को भी।

"अनकहे दर्द" आपके सम्मुख है, पढिये। सुझाइये अपने विचार।

अपने प्रेरणा स्रोतों के सम्मुख नतमस्तक हूँ। प्रथम मेरे परम पूज्य पिता श्री स्वर्गीय श्री मुरारी लाल गुप्ता ही थे। दूसरा घर का वातावरण भी साहित्यिक ही रहा। भ्राता श्री दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' ओजस्वी वाणी के कवि हैं। उनके कारण घर में विद्वान मनीषियों से भेट मुलाकात हुई व सुनने का अवसर भी मिला।

बीकानेर आगमन पर श्री भवानीशंकार व्यास 'विनोद' जो बडे भ्रातासम हैं, प्रेरणा स्रोत बने। बीकानेर मंडल में कवि सम्मेलनों में जाने का सुयोग बना है। आकाशवाणी से पिछले बीस वर्षों से जुडाव है। मेरे पति श्री जवाहर लाल गंगल सदा मेरे साथ हैं। साहित्यिक गोष्ठियो कवि सम्मेलनो में ले जाने का श्रेय उन्हीं को ही जाता है।

'अनकहे दर्द' आपके हाथो में सौंप कर आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा मे–

प्रमिला गंगल

3 6 99

C-46, गाधी कॉलोनी,
नगणेची पथ,
पवनपुरी, बीकानेर
दूरभाष · 541281

# अनुक्रम

## भू–वन्दना

विश्व–वंदिता भारत भू को कोटि –कोटि वन्दन।
नित कोटि–कोटि वन्दन।।
लक्ष्मी की इस वीर भूमि को,
यशोधरा की वीर भूमि को,
कोटि–कोटि वन्दन।।
रामेश्वरम् चरण से वंदित
वदित भाल हिमालय का तन।
जाति–पाँति का भेद भूलकर,
गले मिल रहा उत्तर–दक्खिन।

उत्तर की दिव्य भूमि को, दक्षिण की इस भव्य भूमि को।
कोटि–कोटि वन्दन।
पूरब की वह भोर रंगीली,
पश्चिम की संध्या शर्मीली।
लूनी, ब्रह्म पुत्र सी बेटी,
गोदावरी–यमुना गर्वीली।
मीरा की इस धर्म भूमि को, पन्ना की इस कर्म भूमि को।
कोटि–कोटि वन्दन।।
अनल साक्षी जिनके सत का,
दैव साक्षी जिनके व्रत का।
लख स्वदेश–हित रणचंडी को,
हो जाता है अरि भी मृत सा।
मैत्रेयी संग फली भूमि को,
पद्मिनियो संग जली भूमि को, कोटि–कोटि वन्दन
विश्व–वंदिता भारत भू को कोटि–कोटि वन्दन।
नित कोटि–कोटि वन्दन।।

## आशा

कितना भी तुम तम फैलाओ मैं प्रकाश भर दूँगी।
कितनी भी हो रात अँधेरी मैं विहान कर दूँगी।।

उर अगाध सा और हिम शिखा सी पाली है आस्था,
होठों पर थिरकी मुस्कानें दर्शायी दिल की न व्यथा,
मुट्ठी में विश्वास थाम कर भाल विजय वर लूँगी।
कितनी भी हो रात अँधेरी मैं विहान कर दूँगी।।

काल–निशा के घहराते ही जीवन गीत बुनूँगी,
उषा–काल सुनहरी वेला, रूनझुन राग सुनूँगी,
तांडव करती भरी दुपहरी आँचल में भर लूँगी।
कितनी भी हो रात अँधेरी मैं विहान कर दूँगी।।

करती हूँ स्वीकार चुनौती ऊँचाई, निर्भय की,
खरा कसौटी पर जो उतरा धरा हुई है उसी की,
डुबा सको तो कमी न करना, साहस कर तर लूँगी।
कितनी भी हो गहन निशा पर मैं विहान कर दूँगी।।

## पूजा रही अधूरी

तन से जितने पास रहे हम, मन से उतनी दूरी।
जीवन बना अग्नि पथ, लेकिन पूजा रही अधूरी।।

काले बादल कितने बरसे किसकी प्यास बुझी है?
पछुआ आग भरी भटकी है किसकी तपन मिटी है?

नीलाम्बर का ओर–छोर ना किसका बना आवरण?
विस्तृत जलधि अपरिमित लेकिन गहराई का किया वरण

विरह मिलन की कथा सुनाती सृष्टि रची है पूरी।
जीवन बना अग्नि--पथ लेकिन पूजा रही अधूरी।।

पीताम्बर पहना पतझर ने नवकलिका मुस्काई।
मरण नहीं जीवन भी सच है प्रमुदित हो अगुवाई।।

प्रकृति तोडती कब अनुबंधन जीव जगत अनुरागी।
अपना राग अलापा हमने ढोग दिखा वैरागी।।

श्वांसों की सरगम जाने कब हो जायेगी पूरी।
जीवन बना अग्नि--पथ लेकिन पूजा रही अधूरी।।

## दिया जो जलाओ

मिट सके कुछ तम इसीलिए कम से कम
अपनी देहरी पे छोटा दिया तो जलालो
दूसरो का नहीं अपना चेहरा सही
दिख सके धूल शीशे से थोडी हटा लो।।

कर्ज सिर पर लिये हम पैदा हुये
कोई युक्ति चुकाने की सोच लो
जागते ही है ये सोने जैसी दशा
बाद सोने के होगी वो गत सोच लो।।

तो बजाओ बिगुल सब होवें विह्वल
एक पल को सही, मैल मन से हटा लो
दूसरों का नहीं अपना चेहरा सही।।

यज्ञ कर्मों का पूरा नही जो किया
मन बहलने के साधन अनेकों किये।
खुद को छलने का क्रम यों ही जारी रहा
श्वांस की डोर पर गांठ बांधा किये
विश्व की गर्मियां बन रहीं उर्मियां
आओ सागर के मन से इन्हें ही हटा लो।
दूसरों का नहीं.........।।

## उजाला

भ्रम का परदा नहीं हमने पाला।
तम के निविडों में ढूँढा उजाला।।

वक्त की पीर ने जब कुरेदा,
भित्ति चित्रों की भाँति उकेरा,
मैं ठगी देखती रह गई तब—

छल गया वक्त का वो चितेरा।
हार आंचल में चुपचाप बाधी,
उनकी ग्रीवा में विजयो की माला।।
भ्रम का परदा नहीं हमने पाला।
तम के निविडो मे ढूँढ़ा उजाला।।

होंठ को आह छूने न पाये,
बन गये मेघ ऑखो मे छाये,
ढोग चलता रहा श्वास का यूँ–
न जिये चैन से मर न पाये।
शाप युक्ता धरिणि भी कहाऊँ
जब कि उर में दहकती है ज्वाला।
भ्रम का परदा नहीं हमने पाला।
तम के निविडों मे ढूँढा उजाला।।

## तुलसी दीप

मैंने अँगना तम हरण हेतु इक तुलसी दीप जलाया है।
छंट जायेगी ये गहन निशा श्वासों का तेल जलाया है।।

इक ओर आस्थाएँ अपनी संकल्प विकल्पो में पलती
झंझावाती झकझोरो ने विरवा तुलसी हहराया है।।
मैंने अँगना तम हरण हेतु इक तुलसी दीप जलाया है।।

श्रद्धा के पुष्प अँजुरी मे, बंट गये फटे जलदो की तरह,
मजबूरी बस रह गये धरे अँधियारे ने धमकाया है।।
मैंने अँगना तम हरण हेतु इक तुलसी दीप जलाया है।।

देना प्रकाश जलकर तुमको, है मिली चुनौती दीप तुम्हे
बनना है ज्योति पुँज तुमको, ममताओ ने दुलराया है।।
मैंने अँगना तम हरण हेतु इक तुलसी दीप जलाया है।।

## सतही प्यार

कब तक गहराई को नापूं, कभी तो सतही प्यार करो
दूर–दूर तक अम्बर फैला, तुम तो धरा उद्धार करो।
कभी तो सतही प्यार करो।।

मैं निर्मल, निश्चल नदियॉ हूँ,
बाधाओ को तोड बहूँगी
मैं जीवन दायिनी जननी हूँ,
कब तट को मैं छोड बहूँगी।
ओ उत्ताल तरंगों वाले, तटिनी को मत क्षार करो।
कभी तो सतही प्यार करो।।

सांस–सांस का फूल सुगंधित
जीवन हार तुम्हारा है।
कलि पुष्प की बगिया साक्षी
सुमन हीन सब खारा है।
ओ विटपों तुम उच्च शिखा से, धरती का आभार करो।
कभी तो सतही प्यार करो।।

रेतीली कणिका बन पाई तो
यदि टूटी हूँ तो तुमसे।
साथ हवा के सदा वही हूँ
निश्चल नहीं हुई मैं तुमसे।
दर्प करो मत ओ नग शिखरों, मत मुझ पर तुम वार करो।
कभी तो सतही प्यार करो।।

## धार

मेरे गीतों का प्यार बहो।
मेरे गीतों की धार बहो।।

तुम जहाँ रुको बन जाय तीर्थ, चाहे काबा हो या काशी।
चाहे बेथलहम, ननकाना, जगती अम्बर का हो वासी।।
*यह त्याग भूमि है याद रहे तुम गांव नगर रस धार बहो।*
मेरे गीतों का प्यार बहो।
मेरे गीतो की धार बहो।।

ये तनी भृकुटियां, उठे हाथ, हों नमित सभी, सब चलें साथ।
है जन समूह की थाह नहीं, है कौन मगर जो चले साथ।
टीका, पगड़ी या फैज, क्रूस, दो मिटा भेद, रसधार बहो।।
मेरे गीतों का प्यार बहो।
मेरे गीतों की धार बहो।।

वातायन सारे बन्द हुये, घुटता क्यों आज हवा का दम?
क्यों कैद हो गई प्रकृति परी, क्यों तोड़ रही मानवता दम?
ओ गीत मेरे तुम सर्वोपरि, जाओ बनकर रसधार बहो।
मेरे गीतों का प्यार बहो।
मेरे गीतों की धार बहो।।

## पल

पल–पल बीत रहा है ऐसे।
बूँद–बूँद, खाली सागर को,
भरने का क्रम करती जैसे।
पल–पल बीत रहा है ऐसे।।

जो वर्जित है वही व्यथित है।
जीवन का क्रम यहीं निहित है।
आकांक्षाओ के गगन विहंग पर
छू लेने में ही गर्वित है।
सूने चक्षु फटे हुए हद लोचन,
डूबे तारा गण हो जैसे।
पल–पल बीत रहा है ऐसे।।

मरु–कण वायु वेग से छूने,
चले गगन को दिये चुनौती।
शाश्वत नमित गगन बेचारा
मेघ–कणो से करे मनौती।
फूल जड़ी धानी चुनरी पर
कल–कल झर–झर, छन–छन जैसे
पल–पल बीत रहा है ऐसे।।

खड़े हुये सदियों से निश्चल
इनमें ही जीवन की गति है।
देते हैं दानी सम जीवन
जागी आँखों की ये अति है।
ठहर गये जो अपने बनकर
अनदेखे हों सपने जैसे।
पल–पल बीत रहा है ऐसे।

## उस पार

क्या है जीवन के उस पार?
दिया टिमटिमाता आँधी में
किसको किसकी है दरकार।
क्या है जीवन के उस पार?

सूरज पर यूं धूल न डालो
बहलाने के उपक्रम छोड़ो।
कितने और खिलौने दोगे?
सच्चाई से मुँह मत मोडो
छिनी जा रही हमसे संस्कृति, तुम पर छाई बहार।
क्या है जीवन के उस पार।।

निज स्वरूप की कान्ति बचाओ
हैं अपने घर सच्चे मोती।
इनकी आब न पहिचाने तो
कोसेगी सदियाँ दुःख ढोती।
मूल-समूल न नष्ट करो तुम, उग आयेंगे खार।
क्या है जीवन के उस पार।।

परिधि बनाकर खड़े रहे तो,
बन जायेंगी और परिधियां।
आशिष और दुआएँ ले लो
उष्मित हैं उत्ताल उर्मियाँ।
क्या अवतार प्रभू का होगा, कर आये हो करार।
क्या है जीवन के उस पार?

## इंसान मर गया

हमने सुना वतन का इंसान मर गया।
इंसान तो इंसान था, ईमान मर गया।।

रिश्तो मे दूरियॉ ही नही, नफरत भी मर गई।
जीते हुये पिता को 'डैड' कह गया।।

उत्कृष्ट मॉ की महिमा मे नत रहे नयन।
अब भाव शून्य ऐसा कि 'मोम' बन गया।।

लकड़ी के चार पायों से मोह देखिये।
ऐसे चिपक गये कि वंश तर गया।।

मस्तिष्क की मशीनरी ने कांड रच दिये।
चाँदी की तुला हाथ थी, सोना भी भर गया।।

कृषकों का देश है मगर, भूखा है जानवर।
चंदा सी रकाबी में चारा भी भा गया।।

खेतों में मशक्कत की जरूरत ही भला क्यों?
खाने की चीज थी सो खाद खा गया।

छत आसमान जिनकी कागज पे घर बने।
पट्टे तो पट गये, हक अपनों में बंट गया।।

ता उम्र घिसे कोयले करतूतें स्याह की।
मुँह में दवा के मोती, वह हंस बन गया।।

गणना करें कहाँ से कि पोर घिस गये।
भारत महान् कांडों का घर बन गया।।

## जहरीली हवा

खुश्की बहुल हुई आभासित, चढ़ी–चढी घटाओ मे।
गंगा शायद सूख चली है शिवशंकर की जटाओ मे।।

जीवन होता जाता दुर्लभ इन जहरीली हवाओं में।
श्वांस अग्नि का भास कराती कहॉ सरसता फिजाओ मे।।

चुके हुये प्राणों मे जीवन, कहॉ असर है दुआओ मे?
जाग्रत कर कर गई चेतना बेदम हुई सदाओं में।

हर आंगन में खार उगे हैं आच कहॉ है वफाओ मे।
जीवन मूल्य चुके कब के है सिमटा सभी जफाओ मे।।

# धुन

बहुत नाच नाचा है मीठी धुनों पर।
कोई तो नई धुन बजे इस जमीं पर।।

बजे धुन कि बिखरे किरन चेतना की।
बजे धुन कि पीडा हरे वेदना की।
बहुत कर्ण प्रिय है वो शब्दों का जादू।
जब तार टूटा तो मीठी धुनो पर
बहुत नाच नाचा है मीठी धुनों पर।।

है मंच अपना वादक है उनके।
नर्तक है अपना, कथानक हैं उनके।
वह उंगुलियों से मसि खींचते हैं
बजी तालियाँ शाहों के हुनरों पर।
बहुत नाच नाचा है मीठी धुनों पर।।

बहुत नाच नाचा है मीठी धुनों पर।
कोई धुन सुनाओ अपने गुणों पर।।

## निगाहें

धुधियाँ गई हैं हमारी निगाहें।
कोई नन्हा दीपक कभी तुम जलाओ।
रस्ते हजारो ही पसरे पड़े हैं
चलूं किस डगर पर तुम्हीं अब बताओ।

तुम्हें नाज है जिस जमीं आसमां पर
नहीं है वह अपना उधर तुम न जाओ।

अपनी है सूखी है मगर वह है मीठी
भरी थालियो पर न नजरे जमाओ।

कंपने लगा है हमारा धरातल
कि अंगद बनो पॉव अपने जमाओ।

बहुत चाशनी है तुम्हारी जुबां में
न मर्यादा शक्कर की यूं तुम घटाओ।

ये सूरत तुम्हारी पे है अक्श किसका?
कहॉ रह गुजर है वह दर तो बताओ।

ये बेखौफ तुम यूँ बढे जा रहे हो
जो नक्शे कदम हो डगर वह बताओ।

कहॉ थे कहॉ आ गये, शुक्रिया है
नहीं वस्तु क्रय की न बोली लगाओ।

जरा खोफ कर मालिके दो जहां से
जो उसने बनाया उसे तो निभाओ।।

## आते नहीं

हम बुलाते हैं उनको जो आते नहीं।
हम हैं उनकी तरह बन भी पाते नहीं।।

कौन मजबूरियाँ, कौन नाकामियाँ।
राह रोके हुये हैं क्यों खामियाँ।
अपने बाजू में हिम्मत दिखाते नहीं।
हम हैं उनकी तरह बन भी पाते नहीं।।

दोष किस पर मढ़ें, दोषी हम भी हुये।
स्वाद आने लगे थे गुड़ के पुये।।
जो गले में फंसे थूक पाते नहीं।
हम हैं उनकी तरह बन भी पाते नहीं।।

अपनी उँचाईयाँ हमने नापी नहीं।
अपनी अच्छाईयाँ हमने आंकी नहीं।
दूसरों के भुलावे भुलाते नहीं।
हम हैं उनकी तरह बन भी पाते नहीं।।

दर्शको के जमूरे बनते रहे।
यूं पग-पग मदारी मिलते रहे।
जो स्वयं को तमाशा बनाते नहीं।
हम हैं उनकी तरह बन भी पाते नहीं।।

## स्वप्न

खुली आँख के स्वप्न अब मत दिखाओ।
बहुत झूले भ्रम में कि अब मत झुलाओ।।

तुम पुस्तकों के पलटते हो पन्ने,
कभी कोई आखर हृदय से लगाओ।
बहुत झूले भ्रम में कि अब मत झुलाओ।।

वादे पे वादे न अच्छे इरादे,
ये बातों के लच्छे हमे मत सुनाओ।
बहुत झूले भ्रम में कि अब मत झुलाओ।।

ये श्वेत पत्र पे काले से अक्षर,
ये दर्द अपने इन्हें मत जताओ।
बहुत झूले भ्रम में कि अब मत झुलाओ।।

जब चाहते छेड़ देते हो सरगम,
अजब बेसुरी ये धुनें मत सुनाओ।
बहुत झूले भ्रम में कि अब मत झुलाओ।।

तिजारत तो मुर्दों की करते ही आये,
जिन्हे श्वांस का भ्रम उन्हें मत भुनाओ।
बहुत झूले भ्रम मे कि अब मत झुलाओ।।
खुली आँख के स्वप्न अब मत दिखाओ।।

## मधुमास

आ गया मधुमास लेकिन, मधु नहीं आया।
झांकता वातायनों से, विधु नहीं आया।।

प्रेम की, सौहार्द की, आ गई कितनी कमी।
आ गया आतंक लेकिन तप नहीं आया।।

झेलती है दुःख अनेकों ये सदी।
दे मृदुल मुस्कान सबको, पल नहीं आया।।

मातृ मृग तृष्णा बना जीवन विषाद।
छांव शीतल दे सके वह बड नहीं छाया।।

गेदे, सरसों औ कनेरों के ये गुल।
आ गये जिनके लिए वह खुद नहीं आया।।

कोकिलों के कंठ में बस चीख पर रस नहीं।
गा सके जो गीत वह सरगम नहीं भाया।।

## बादल से

निकलो बादल घर से, घर से
निकलो बादल घर से

हाहाकार मचा भूतल पर
जल बिन प्यासे तरसे–तरसे
निकलो बादल घर से।।

लाल रंग की खूनी चदरिया।
धरती ओढ़े देख बदरिया।
शस्य श्यामला जिसकी शोभा
तुझ बिन कैसे तरसे तरसे।
निकलो बादल घर से।।

जीव जन्तु में त्राहि मची है।
ताल–तलैया प्यास खिंची है।
जले जा रहे फूल भ्रमर सब
कंपी लताएं डर से, डर से।
निकलो बादल घर से।

प्यासी गैया, प्यासा कौआ।
प्यासी तुलसी, प्यासा महुआ।
केर–बेर सब प्यासे सूखे
बरसो तो सब हरषे–हरषे।
निकलो बादल घर से।।

अँगारे सी दहकी धरती।
दरकी मिट्टी परती–परती।
कैसा निष्ठुर धरती का सुत
द्रवित नैन ना बरसे–बरसे।
निकलो बादल घर से।।

## निराशा

चारों ओर घोर निराशा जानी औ पहचानी है।
तेरी–मेरी इस मरुवन की, सबकी एक कहानी है।
अम्बर है अम्बार आग का
धरती परती काल की।
चन्दा से अमृत ना बरसे
जै जैकार अकाल की।।

धरती पी गई ताल तलैया, तरू लगते रूहानी है।
तेरी–मेरी इस मरूबन की, सबकी एक कहानी है।।
ऊँचे टीले, टपरे खाली
पशु कंकालों की भरमार।
बचपन की पहिचान खो गई
खाली पेट भूख की मार।।

कहते हैं गोदाम भर हैं पर लगता बेमानी है।
तेरी–मेरी इस मरूबन की, सबकी एक कहानी है।।
श्रम ही जिसकी पूजा, श्रद्धा
रोजी रोटी थी मनुहार।
भूखी आँते लगी सिकुडने
रूठ गया है सरजन हार।

शिल्पी, दानी, सरजन रूठा, रूठी निरी जवानी है।
तेरी–मेरी इस मरूबन की, सबकी एक कहानी है।।

होठों पे सिसकियाँ है, आँखो में बादल है।
ऐसे मे कौन कहे ऋतुराज स्वागत है।
छनक नही कंगना में, आग भरी मांग में।
कौन गीत गायेगा फागुनी सुहाग में।।

ओ रे ऋतुराज कहीं हिम का दर्प टूटे ना।
दक्षिण की आँख से, शर्म कोई लूटे ना।
गाओ ऋतुराज कही तुम न दीप राग में।
कौन गीत गायेगा फागुन सुहाग में।।

गॉधी का देश, अहिंसा सदा पली है,
जो बर्बर हैं उन्हें एकता सदा खली है,
अपनों का ये दमन चक्र डायर धुंधलाया
मूल भावना एक देखकर नियति जली है।
शतरंजी चालों का मुहरा बना रहे हो।
जीत हार का प्रश्न चिह्न क्यों लगा रहे हो?

आश्वासन और दिलासाऍं सब झूठी,
कदम कदम पर चाल बदलते बडी अनूठी
वेच दिया ईमान चंद सिक्को पर जिसने–
पोछ दिया सिंदूर और गोदें भी लूटी।।
बने दुःशासन द्रोपदियों के कोठे सजा रहे हो।
जीत हार का प्रश्न–चिह्न क्यों लगा रहे हो।।

लेश मात्र ये लगे न अपने जो गैरों पर छाये,
अन्नपूर्णा के घर शैशव, समय पूर्व कुम्हलाये।
बडी विषमता बड़ी विडम्बना कुत्ते घूमे कारो मे–
शैशव भीख मांगता फिरता सडको और गलियारो मे।
जाति भेद की पोथी वंचाते कैसे ये पापिष्ठा।
जमा रहे कुर्सी के पाये कुर्सी के अधिष्ठा।।

लम्बी चौडी हॉक लगाते समानता अधिकारो की,
कथनी करनी अंतर भारी, देन यही कुविचारो की।
कब तक हंसे कि टाले कोई नादानी या वेशर्मी–
पांच वर्ष के भगवानों की झेली सबने नादानी।
कहती हूँ तकदीर बनो मत, नहीं हो तुम कोई स्रष्ठा।
जमा रहे कुर्सी के पाये, कुर्सी के अधिष्ठा।।

किलकारियाँ ये भरते हंसते हुये शिकारे–
लहरें उदास, डल भी बेनूर हो रहा है।।

वो वर्फ सात रंग की भरती छटा किरन से।
खूं रेज़ी, खूं खराबा, हर सिम्त हो रहा है।।

सैलानियों की मस्ती मेले भरे भरे से–
ये आलमे चमन था, खामोश हो रहा है।।

## कौमी एकता

मेरी गीता के छिन्न तार,
मेरी कुरान के भिन्न वार,
मेरी बाइबल क्यो तडप उठी–
रोया मेरा गुरु ग्रन्थ सार।।

ये ज्वाला कहॉ से उठी?
ये हवा कहॉ गर्मायी है?
हम चप्पा चप्पा ढूंढेगे–
ये किसने आग लगायी है?

लाशो को ढोते औ गिनते,
हम स्वयं हो गये मुर्दाघर
अब ठौर तुम्हारे ढूढेगे–
फिर देखेंगे हम अपना घर।।

हम उस उंगली को तोडेंगे
तुम जिस उंगली पर नाच रहे।
हम खत्म करेंगे वह भाषा
जिसकी पोथी तुम बाँच रहे।।

माँ की ममता के अधिकारी,
तुम कभी नहीं बन सकते हो।
तुम दूध लजाने वाले हो,
तुम हत्यारे बन सकते हो।।

तुम कफ़नों के सौदागर हो।
तुम वार निहत्थों पर करते हो।
ये राज कहाँ टिक पायेगा।
लाशों के जत्थों पर करते।।

तुम ढाई अक्षर भूल गये
जिससे ये दुनियाँ बंधी रही।
तुम भूल गये अपना नाता,
ममता समता में बंधी रही।।

अंधे जुनून मे बहक गये
शर्मिन्दा जलियाँ वाग हुआ।
ये कांड मुक्तसर दरियापुर
डलहौजी भी बेदाग़ हुआ।।

अपने घर में तू लगा
तेरा घर कब बच पायेगा?
झूठे ढांढस के तिनकों से
किस शाख पे नीड बनायेगा?

ओ आस्तीन के पले सांप,
अब तक तुझ पर विश्वास लिये।
फन भी कुचलेंगे तो हम ही–
तेरे सुधार की आस लिये।।

## कोई गीत

कभी तो कोई गीत ऐसा सुनाओ कि
जिस पर सभी के सुर सज रहे हों।
सातो सुरो का हो संगम ऐसा कि
भाषा विवादो के तम झर रहे हो।।

विविध रूप हमने सजाये संवारे
विविध बोलियो पर पहरे बिठाये
मगर प्रेम की एक भाषा सयानी–
जो सबके दिलो को सजोये संवारे।

दानी कहते प्रथम नाम के तुम
जो देना है उसमें कमी कर रहे हो।।
सातो सुरों का हो संगम ऐसा कि
भाषा विवादों के तम झर रहे हो।।

मैं और मेरा तुम औ तुम्हारा,
किसी ने कहा न ये है हमारा।
परिधियों से बाहर निकल कर तो देखो
आत्मिक सुखों का है ये सहारा।
जिये जा रहे निरर्थक सा जीवन
अपने हो, अपनो से क्यो कट रहे हो?
सातों सुरों का हो. संगम ऐसा कि
भाषा विवादों के तम झर रहे हो।।

## सूरत

जिसने देखी नहीं अपनी सूरत अब दिखाते है शीशा वही।
मुंह के कहने को छोटी जुवां पेट मे है उतनी बडी।।

हम सफर हम जुबां कहते सुनते
कान पक से गये हैं अपने
हर तरफ है जहर का बुझा
पल पल मे घुटन है बडी
मुह मे कहने को छोटी जुवां पेट मे है उतनी वडी।।

कीमते मुर्दों की भी लगती
जिन्दा कंधों पे हैं लाश ढोते
क्यो सुरक्षा का कद इतना छोटा
जब कि जीवन है मोती लडी।
मुंह में कहने को छोटी जुबा पेट में है उतनी बडी।।

तप, तपस्या, तपोभूमि की
शुचि संस्कृति सनातन हमारी।
जहॉ पूजी सपूतो ने ममता
आज खतरे मे वो क्यों पडी?
मुंह में कहने को छोटी जुबां पेट मे है उतनी बडी।।

## पूजा

मैंने पूजा भी की, वन्दना भी की,
अर्चना भी की तो तुम्हारी ही की।
मैं स्वयं को पृथक तुमसे कर न सकी–
धूल चरणो की ली तो तुम्हारी ही ली।

तुमने व्यक्तित्व अपना संभाले रखा,
हमने अस्तित्व अपना लुटाया सदा,
तुम प्रकाशो में भी लौ बढाते रहे–
हमने हाथो से तम को हटाया सदा।

तुम खुले द्वार थे कब पलट देखते
मैं तो खिड़की का पट थी बन्द ही रही।
धूल चरणो की ली तो तुम्हारी ही ली।।
मैंने पूजा भी की..................................तुम्हारी ही ली।।

तुम वृहद रूप ले वृक्ष वनके तने
एक झाडी थी जूझती ही रही।
तुमको संसार में स्वर्ग अनुभूति थी–
मेरी छाया मुझे सूझती ही नहीं।
दूर भागा किये, किन्तु चल न सके
रेंगती ही रही साथ देती रही।।
धूल चरणों की ली तो तुम्हारी ही ली।।
मैंने पूजा भी की..................................तुम्हारी ही ली।।

## देवता

चल दिये देवता रूठ कर इस तरह,
मेरी पूजा मे शायद कमी रह गई।
की तपस्या कि जलते कटी उम्र भी,
मेरे जलने में शायद नमी रह गई।।

फूल पूजा के चुनने से पहले नमन,
चरन छूने से पहले झुके ये नयन,
भार था लाज का मुंद गये ये पलक–
पर, परत ऑसुओं की जमी रह गई।
मेरी पूजा में शायद कमी रह गई।।

आसमॉ पे जो छाये वो बरसे नहीं,
छा गये आँख में किन्तु हरये नहीं,
सुन चुकी कब हवा भी सदा वक्त की–
धूल खिड़की पे यूं ही जमीं रह गई।
मेरी पूजा में शायद कमी रह गई।।

## अहसास

नजदीकी का अहसास स्वयं ही सम्बल है।
प्यासे को एक बूंद स्वयं ही चम्बल है।।

बढे ये कैसे हाथ गगन की आस नहीं।
कहां धरे ये पांव धरा भी पास नहीं।।
सूना सूना नगर डगर भी भूल गई।

नाम जिन्दगी मगर लाश सी झूल गई।।
क्यों कर दें फिर दोष कि श्वांसों में ही छल है।
प्यासे को इक बूंद स्वयं ही चम्बल है।।

कितनी है निःसार प्यार की परिभाषा।
अपने पन का शब्द लगे देता झांसा।।
अधिकारो की होड़ घुटन सी होती है।
कर्त्तव्यों का बोध चुभन सी होती है।।
'आज' कटे तो मिली सुरक्षा अभिशापित सा 'कल' है।
प्यासे को इक बूंद स्वयं ही चम्बल है।।

## भटकन

कब तलक भटका करूँ, यों दर्द को दिल मे लिये।
आप आयेगे कभी क्या, सिर्फ कॉधे के लिये।।

मैं बरसना चाहती थी, शुष्क रेगिस्तान मे।
बूँद सागर की बनी थी, निमिष नखलिस्तान मे।
चुक चुकी हूँ बहते–बहते रेत टीबो के जिये।
आप आयेगे कभी क्या सिर्फ काधे के लिये।।

अश्क की क्या है कहानी, ऑख कब कह पायेगी?
दिल तो गहराई धरा की, कब जुबां खुल पायेगी?
मौन की आहें बहुत है, भस्म पत्थर के लिये।।
आप आयेंगे कभी क्या, सिर्फ कांधे के लिये।।

शून्य की सीमा अपरिमित, हूँ अपरिचित स्वयं से।
बूंदो से सागर भरा है, फिर पृथकता स्वयं से।
जो कभी जीना न सीखी एक पल अपने लिये।
आप आयेगे कभी क्या, सिर्फ कांधे के लिये।।

## शब्द रोते हैं

गीत कैसे लिखूं शब्द रोते हैं।
जागती है धरा, अर्थ सोते हैं।
गीत कैसे लिखूं शब्द रोते हैं।।

कोयले से न पंचम सुनाई पडे
नाचे मोरा नहीं, न आपाढी झरे,
पुष्प रोते है, गुंजे भिगोते हैं।
गीत कैसे लिखूं शब्द रोते हैं।।

गर्म होने लगा है हवाओ का रुख
शर्म खोने लगा है लिहाजों का रुख
कर्म कलुषित हुये, मर्म रोते हैं।
गीत कैसे लिखूं शब्द रोते हैं।।

ताल सूखा नहीं मछलियॉ खो गई,
आज बगुलों की वृत्ति कहां खो गई
रीते गड्ढों में चोचे डुबोते है।
गीत कैसे लिखूं शब्द रोते हैं।।

## पनिहारिन

मैं रीते घट की पनिहारिन, मरूधर ताके मेरी ओर।।
हर घट में इक प्यास छिपी है।
मरूधर की इक आस छिपी है।
उमस भरी इस पगडंडी पर–
जीवन की हर श्वास छिपी है।।
क्षण भंगुर सी मरू–रेखाएं, ताक रहीं क्यों सागर छोर?
मैं रीते घट की पनिहारिन, मरूधर ताके मेरी ओर।।

उषा निशा सी रूप बदलती।
मरू बयार हर निमिष संवरती।
इस बीहड कंटक जीवन में–
बूंद बूंद सी प्यास छलकती।।
संघर्षो मे विहंस–विहंस कर झांक रही है जीवन भोर।
मैं रीते घट की पनिहारिन, मरूधर ताके मेरी ओर।।

## बाँध

देहरी ने लेली है दृढ़ता पर्वत सी ऊँचाई,
औ अगाध विश्वास लिये सागर सी गहराई,
प्रेम–सेतु को इस पर प्यारे बॉध सके तो बाँध।
अरे तू लाघ सके तो लांघ।।

सूर और तुलसी ने लांघी ले समरथ की साध।
अरे तू लांघ सके तो लांघ।।

बली बहुत हैं हाथ तुम्हारे पेट पकड कर रोये,
तुमने कब जीवन को देखा केवल मुर्दे ढोये
हमने तो पूजा है जीवन, कभी न पाली व्याध।
अरे तू लांघ सके तो लांघ।।

झिलमिल–झिलमिल चमक रही है, जब तक बाती घी मे,
अंधकार है बड़ा घनेरा ज्योति पुँज के जी मे,
भभक उठेगी, भस्म करेगी, अपनी गठरी बाँध।
अरे तू लांघ सके तो लांघ।।

## प्रीत के गीत

मीत के गीत गाओ तो गाओ सही।
प्रीति धरती पे अपनी लुटाओ सही।।

गाओ ऐसा कि हों मंत्र मुग्ध सभी।
होंठ से शब्द फूटे हों तृप्त सभी।।
हो भले एक सपना, दिखाओ सही।
प्रीति धरती पे अपनी लुटाओ सही।।

बन गई जिन्दगी रस्म जीना यहाँ।
अनचहे घूंट पडते हो पीना जहाँ।।
मुर्दा चेहरो पे मुस्कान लाओ सही।
जिन्दगी से ये कटुता भुलाओ सही।।

मीत के गीत गाओ तो गाओ सही।
प्रीति धरती पे अपनी लुटाओ सही।।

## यकीन (1)

आका बता इन रहबरों पे कैसे हो यकीन?
करते है दस्तबन्दगी खंजर छिपा के वो।

शामो सहर है सजदे किये और कराये।
तस्लीम के जवाब मे नश्तर बनाते वो।

रहमों करम की बात पर खुलती रही जुबां।
नापाक कर रहे यहाँ मस्जिद शिवाले वो।

आब–ओ–हवा हम साया भी खुदगर्ज़ हो गया।
खाने लगी हैं उंगलियां खुद के निवाले वो।

## यकीन (2)

तूफान में कश्ती के भरोसे का क्या यकीन।
डूबे कि किनारे पे लगे इसका क्या यकीन।।

हर शाख पे इक तान नई छेडती बुलबुल।
वह शाख साथ देती रहे, इसका क्या यकीन?

जिस शाख पे कुमरी ने बनाया था नशेमन।
वह शाख भी होगी न जुदा इसका क्या यकीन?

कहने को तो यकीन पर कायम है ये दुनियॉ,
कायम रहे यकीन यह इसका क्या यकीन?

## गीत (अंधेरा)

आप पर से जो यकीं उठ जायेगा।
महज़ अंधेरों के क्या रह जायेगा।।

शूल चुभते हैं तो चुभने दीजिये।
कम से कम उनका धरम रह जायेगा।

ठोकरें खाना तो पत्थर का नसीब।
फूट कर छाला कहीं रह जायेगा।।

जलता है उसको तो जलने दीजिए।
वर्ना घुट घुट कर धुआं रह जायेगा।।

पत्थरों के देश मे शीशा जड़ा।
टूटेगा तो चुभ के भी रह जायेगा।।

किसने की है कावलियत की शिनाख्त।
दस्तावेजो में दबा रह जायेगा।।

## गीत (उम्र)

हम अंधेरे में पलते रहे उम्र भर,
काट ली जिन्दगी रोशनी के लिये।
वह उजालों से भरते रहे गैर घर,
हम तडपते रहे आरती के लिये।

नाम शामिल शहीदों में जिनका रहा,
उनका कोई पता या ठिकाना नहीं।
मुझको कोई भी शिकवा शिकायत नहीं
गर विखेरो रहम जिन्दगी के लिये।।

यह थी ख्वाहिश उजाले रहे साथ में,
रोशनी सब के घर में बिखरती रहे।
हम शमां बन के जलते रहे उम्र भर
जिन्दगी भर लड़े तीरगी के लिए।।

## गीत (कौन हो?)

तुम कौन हो, कहाँ हो, न सीख पाये हम।
ये जिन्दगी तेरी तरह न बीत जाये हम।

तेरे ये रंग अजब, गजब तेरी निराली चाल।
हम दूर बहुत आ गये क्या दे सकेगी मात?
तू पासा फेकती रहे औ जीत जाये हम।
ऐ जिन्दगी तेरी तरह न बीत जाये हम।।

हमने जो खींचा चित्र भरे शोख रंग सात।
ऐसा न हो कि सुबह से ही पहले आये शाम।
ऑखे न नम करेंगे कभी, गीत गाये हम।
ऐ जिन्दगी तेरी तरह न बीत जायें हम।।

ऐ तेरी मेरी ही नहीं सारे जहां की रीत।
अच्छा खिलाड़ी है वही जो तुझसे जाता जीत।
तू तो भरी–भरी रहे न रीत पाये हम।
ये जिन्दगी तेरी तरह न बीत जायें हम।।

## गीत (बाजी)

बिखर बिखर रह जाते गीत।।
तन मन किया समर्पित तुमको, इसका अर्थ नहीं मजबूरी।
संस्कार की परिधि हमारी, शब्दों से दो इसे न दूरी।
सदा हार हमने ही मानी, इससे जाते बाजी जीत।।
बिखर बिखर रह जाते गीत।।

मैं तो बन्द किताब सदा थी, तुमने कब पढना चाहा था?
फूट पड़े कुछ शब्द स्वयं ही, गीतों ने गढ़ना चाहा था।
और नियति ने जो लिखा था, वह भी कैसे जाता बीत।।
बिखर बिखर रह जाते गीत।।

भावो का जब बोझ बढा तो, शब्दों ने अगडाई ली।
कितनी लोरी थपकी देती, पाहुन ने पहुनाई की।
द्वार तुम्हीं ने खटकाया है, भंवरो ने मत उलझो मीत।
बिखर बिखर रह जाते गीत।।